International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN Number: 2394-7519
IJSR 2014; 1(1): 26-28
© 2014 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 15-11-2014
Accepted: 18-12-2014

अनीता पाण्डेय
डा0 राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय
महावीर छपरा गोरखपुर

Correspondence:
अनीता पाण्डेय
डा0 राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय
महावीर छपरा गोरखपुर

कविरत्न श्रीकृष्ण प्रसाद घिमिरे का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अनीता पाण्डेय

प्रस्तावना

किसी भी कवि की कृति का पर्यालोचन करने से पहले कवि का परिचय उसका व्यक्तित्व, जन्म स्थान, कृति आदि के सम्बन्ध मे विचार करना अत्यन्त आवश्यकता होता है, ऐसा करने पर कवि की कृति के सम्बंध में बहुत से रहस्यों का पता ज्ञात हो जाता है।

कवि का जन्म स्थान :

कवि ने अपने जन्म स्थान आदि के विषय में प्रस्तुत महाकाव्य के प्रथम सर्ग में उल्लेख किया है। उस उल्लेख के अनुसार इनका नेपाल निवासी होना सिद्ध है–

नैपालिकोऽहं पर तथ्य वेदिषु। विज्ञापये साञ्जलिंक बचस्त्विदम्।।

श्री कृष्ण चरितामृतम् की समीक्षा करते हुए नेपाल के प्रसिद्ध विद्वान श्री माधव प्रसाद देवकोटा ने जो हर्षोद्गार व्यक्त किया है उसके अनुसार कवि का नेपाल की राजधानी काठमांडू का निवासी होना सूचित होता है।

नेपाल राजधानीस्थों घिमिरे कुलदीपकः। कवि कृष्ण प्रसादोऽयं चकास्ते ग्रन्थ गौरवात्।।2

कवि के जन्म का समय :

कवि ने स्वंय जो अपना इतिवृत्त लिखा है उसके अनुसार विक्रम संवत् 1976 अर्थात् 1919 ई0 के अगस्त मास में जन्माष्टमी की पावन तिथि को रात्रि में 10 बजकर 4 मिनट पर कवि का जन्म हुआ था। जन्म के समय उनके पिता जी के आदेश से उनका माली उसी अवस्था में उन्हें चौश्राहे के पास के गड्ढे में डालकर पुनः उठाकर घर ले आया। कवि के पिता ने ऐसा आदेश उनके जन्म के समय के अरिष्ट के शमन के लिए दिया था।

स्थानीय महत्व :

कवि ने अपने जन्म स्थान के महत्व पर भी प्रकाश डाला है। कवि द्वारा वर्णित उस वृतान्त से पता चलता है कि नेपाल निवासी और प्रसिद्ध कोश ग्रन्थ अमर कोश के कर्ता श्री अमर सिंह का शंकराचार्य जी के साथ शास्त्रार्थ की घटना उसी चौराहे पर घटित हुई थी। जिस चौराहे के गड्ढे में कवि को डलवाकर उठवाया गया था। श्री अमर सिंह बौद्ध धमार्व लम्बी थे और लगातार कई इनों के शास्त्रार्थ के पश्चात् शकंराचार्य जी से परास्त हुए थे। उस गड्ढे में भगवती सरस्वती की पत्थर की मूर्ति थी। अतः सरस्वती की कृपा से शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में पराजित करने के उद्देश्य से अमर सिंह ने उस स्थान को चूना था।

कवि ने नेपाल को उसकी प्राकृतिक सुषमा एवं भगवान शिव की पशुपति नाथ के रूप में उपस्थिति से अत्यधिक पवित्र एवं महत्वपूर्ण राष्ट्र बताया है। हिमालय की सर्वोच्च शिखर सागर माथा (एवरेस्ट) के अतिरिक्त अन्नपूर्णा, माछापुच्छे, लामताड् और गौरी शंकर आदि पर्वत शिखर नेपाल की प्राकृतिक सुषमा में चार चांद लगाती है। विशल्पीकरण, संजीवनी आदि अनुपम जड़ी–बूटियों के कारण नेपाल का बड़ा महत्व है। नेपाल में अत्यधिक खनिज सम्पदा भी विद्यमान है। कवि के अनुसार भगवती सीता उत्पत्ति स्थान जनकपुर धाम भी नेपाल में ही है। यहां के राजा जनक की गोष्ठियों में विश्व भर के विद्वान एकत्रित होते थें। अतः नेपाल आध्यात्मिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण है।

कवि का ग्राम एवं उसका महत्व :

नेपाल की राजधानी काठमांडू से पश्चिम लगभग 12 कोस की दूरी पर नुवाकोट जिले में स्थित पिपलडाड़ा कवि का पुस्तैनी ग्राम है। नादियों, जल स्रोतो एवं लता वनस्पतियों के कारण उक्त ग्राम का प्राकृतिक सौन्दर्य दर्शनीय है। इस ग्राम के दक्षिण ओर बहने वाली त्रिशूली नदी को यहॉ लोग गंगा के समान पवित्र मानते है।

कवि श्रीकृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे का वंशवृक्षः

कवि ने वंश का जो वर्णन किया है उसके अनुसार उनके पूर्वज कश्यप गोत्रीय उपाध्याय ब्राहमण थे जो विक्रम संवत् की उन्नीसवीं शदी के प्रारम्भिक समय से पिपलडाड़ा गांव में रह रहे थें। उनके पूर्वजउपनाम के रूप में अपने नाम के अन्त में घिमिरे शब्द जोड़ते आए थें। इनके पूर्वज किसान थें। इनके अतिवृद्ध प्रपितामह श्री पृथ्वी नारायण शाह के उस अभियान में सहयारेगी थे जिसे उन्होनें छोटे–छोटे राज्यों के एकीकरण के लिए उस अभियान को चलाया था। कवि को अपने जिन अति वृद्ध प्रपितामह के बारे में जानकारी है उनका नाम था श्री चन्द्रशेखर घिमिरे। उनके पुत्र थे श्री पीताम्बर घिमिरे जो गृहस्थ जीवन के गोरखधन्धों में उलझकर शिक्षा क्षेत्र में कुछ नहीं कर सकें। उनके पुत्र श्री रामकुष्ण घिमिरे थे जिनको कवि ने अपना प्रपितामह बताया है इनकी प्रपितामह का नाम हीरा देवी घिमिरे था। श्री राम कृष्ण घिमिरे के पुत्र श्री वीर भद्र घिमिरे थें। उनकी पितामही का नाम सरस्वती देवी था। श्री वीर भद्र के दो पुत्रों में से कनिष्ठ पुत्र का नाम श्री केदार नाथ घिमिरे था जो कवि के पिता थे। उन्हें गांव के लोग शिव लाल घिमिरे के नाम से भी पुेारते थें।

कवि ने अपने महाकाव्य श्री कृष्ण चरितामृतम् में अपना जो परिचय दिया है उसके अनुसार इनके पिता और गुरू घिमिरे

केदारनाथे जनको गुरुर्मे
यः काश्यपोऽभूद दृढकर्मयोगी।
जृम्भेत वीर्यघिमिरे–कुलस्य
दीपस्य तर्स्यव सुतस्य कृत्ये।।3

अर्थात् मेरे कश्यप गोत्रीय पिता एवं गुरू श्री केदार नाथ जी सुदृढ़ कर्मयोगी हो गये थे वे घिमिरे कुल के प्रदीप थे उनके पुत्र की कृति में उन्हीं की दी हंई शक्ति बढ़ती रहें।

कवि की माता का नामः

कवि ने महाकाव्य श्री कृष्ण चरियतामृतम् में अपनी मॉ का जो परिचय दिया है उसके अनुसार इनकी माता का नाम मनोरथ कुमारी था जो प्रस्तुत महाकाव्य के रचना काल के समय दिवंगत हो चुकी थी।

सती सीमान्तरत्नाभा पतिलोकमितो गता।
मनोरथकुमारीति मन्माता दीव्यताचिरम्।।4

कवि ने अपने बड़े भाई की भी चर्चा अपने महाकाव्य में की है। उनके बड़ें भाई का नाम श्री रेवती प्रसाद है जो भागवत की कथा के ज्ञाता और प्रचारक भी रहे है। वस्तुतः भागवत कथा सुनाना ही उनका मुख्य कर्म रहा है। उनकी इस वृत्ति की कवि ने प्रशंसा की है–

कूर्वन भागवतीं वृतिं भ्रमंश्चेतस्ततोऽनिशम्।
स रेवती प्रसादों मऽग्रजो बर्धतेकर्मभिः।।5

कवि के पूज्यपाद भाई जी की ब्रहालीनता–

कवि श्री कृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे के बड़े भाई श्री रेवती प्रसाद जी का देहावसान 11 जनवरी 1983 में हुआ था। उस समय कवि भारत भ्रमण पर निकले हुए थे और कुछ प्रान्तों में घूमकर बनारस आकर रूके हुए थे। वहीं उन्हें घर से आया एक तार प्राप्त हुआ। जिसमें लिखा आपके बड़े भाई जी 1983 जनवरी 11 ता0 के दिन ब्रहालीन हो गयें। इन शब्दों को पढकर कवि पथ की ओर अग्रसर होते हुए तत्काल गड़ा जी को जलाञ्जलियॉ समर्पित की। कवि के पूज्य पाद बड़े भाई श्री रेवती प्रसाद घिमिरे जी जो कवि के लिए सब कुछ थे मार्ग दर्शक उपदेशक तथा वैदिक गुरू आदि तो थे ही साथ ही साथ कवि ने अपने पिता जी के ब्रहालीन होने पर उनका स्थान भी अपने बड़े भाई को दे रखा था। और कवि की पत्नी कवि के बड़े भाई का आदर के साथ सेवा भाव किया करती थी।

कवि के बड़े भाई की दो पत्नियों से चार पुत्र थे। श्री दामोदर प्रसाद घिमिरे , श्री मनोहर प्रसाद घिमिरे, श्री हरि प्रसाद घिमिरे, श्री वासुदेव घिमिरे । जो कवि से अलग होकर नारायण गढ में रहते थे उनकी पुत्री का नाम शान्तामिश्र था। यह अपने घर काली माटी काठमांडू में अपने दो लड़कियों और दो लड़को के साथ रहती थी। अपने कुटुम्बियों की चर्चा के प्रसंग में कवि ने अपनी पत्नी कृष्ण कुमारी का भी उल्लेख किया है। उनकी पत्नी पति परायणा एवं शुभ कर्मो वाली भद्र महिला है जो कभी अपने पति से ईर्ष्या न करके सर्दव उनकी सेवा में तत्पर रहती थी। जैसा कि द्रष्टव्य है–

ययाऽत्रधार्यतेनीडर्य स्वपतिः कवितारतः।
पत्नी कृष्ण कुमारी में दीव्यतादिह कर्मतः।।6

कवि की पत्नी कृष्ण कुमारी बहुत ही सुशील और विनम्र महिला है जिनकी उम्र लगभग 80 वर्ष के आस –पास की होगी।

कवि के पुत्रियों का परिचय

कवि श्री कृष्ण प्रसाद शर्मा घिमिरे की छः सन्तानों में से चार पुत्र और दो पुत्रियां थी। कवि के बड़ी पुत्री का नाम जयन्ती था। जिसका विवाह मंदिर प्रसाद लम्साल जी से हुआ था। जो जल वितरण विभाग में अच्छें पद पर कार्यरत थे। और इसकी पॉच लड़कियां भी है। उन्होंने स्वंय बी0ए0, बी0एड0 की परीक्षा उर्त्तीण की है और हाई स्कूल में अध्यापन का कार्य करती है। कवि के छ्छोटी पुत्री का नाम कविता था जिसके जन्म से कवि ने कविता के क्षेत्र में पदार्पण किया था। उनके अनुसार वह कविता की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती का प्रसाद थी। क्योंकि कविता की प्रेरणा उन्हें उसके जन्म के बाद ही मिली थी। कवि सम्भवतः अपनी छोटी पुत्री से अपेक्षाकृत अधिक स्नेह करते थें। क्योंकि अपने महाकाव्य में उसकी चर्चा बड़ी पुत्री से पहले की गई है। तथा कवि ने उसे सती पद को प्राप्त करने का आशीष भी दिया है–

महांकवितया दत्ता मत्सुमाऽथ कनीयसी।
कुमारी कवितानाम्नी सतीपदमियाच्छनैः।।7

कवि के गुरू :

कवि ने अपने महाकाव्य श्री कृष्ण चरितामृतम में दो गुरूओं का उल्लेख किया है–

1. लौकिंक गुरू
2. पारलौकिंक गुरू लौकिंक गुरूः

कवि के लौकिंक गुरू का नाम श्री शेष राज था जो नेपाल के प्रसिद्ध विद्वान् देवचन्द्र जी के मझले पुत्र थें। श्री शेषराज उच्च कोटि के विचारक, विद्वान् औश्र गुणाग्रही व्यक्ति थें। उनका चित्त शान्त और बुद्धि तीक्ष्य थी–

द्वौ में गुरू लौकिंक –पारलौकिंक
श्री शेषराजों गुरूरेक उच्चधीः।
यो देवचन्द्रस्य सुधस्य मध्यमः।
पुत्रोऽस्त्यसौ शान्तमना गुणाग्रही।।8

कवि के गुरू श्री शेषराज जी अध्यापन के प्रसंग में काशी में निवास करते थे और प्रतिदिन गंगा स्नान के लिए जाया करते थें–

शैवीं पुरीमाश्रयताऽमुना सता
गंगडाऽपति साः स्वात्मगुणैः प्रलोभिता।
स्नानार्थमायान्तममु न्यधादहो।
प्रत्यूष एवाडगकड इयं तरगिडणी।।9

श्री शेषराज रेग्गी जी मालवीय जी द्वारा स्थापित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में शिक्षण थें। वहां से आकर उन्होने नेपाल वाल्मीकि महाविद्यालय में भी अध्यापन का कार्य किया था। वे इतने विद्या–व्यसनी थे कि अपने घर पर भी पढाया करते थें। घर पर उनके पढने वाले नेपाली छात्रों के साथ–साथ भारतीय छात्र भी होते थें।

तन्मालवीये श्रिय विश्व पूर्वके
विद्यालयेऽन्यत्र तथा गृहेऽपि च।
शास्त्राण्यथाऽनेन सुपाठिता भृशं।
विद्यार्थिनों भारत वासिनोऽपि च।।
तथा स्वदेशे नयपाल मण्डले।
वाल्मीकि विद्यालय मध्यमागताः।
गृहागताः शिष्यवरास्तथाडवराः।।
पाठ्यन्त एतर्ह्यमुनाऽयहो डनिशम्।।10

कवि को कवि कर्म के द्वारा जिस अमूल्य वस्तु को प्राप्त करने की कामना थी वह भी निर्मल कीर्ति यही कारण है कि उनकी परम प्रिय कीर्ति का बखान भारतीय विद्वान आज भी किया करते है–

आसीत् सुशीला रमणी गलद्वयाः
सत्कीर्तिरूपाडस्य मनोहरा प्रिया।
प्रलोभिता भारत वासिभिर्बुधै
र्गताऽधुना तिष्ठति तद्वचस्ययहो।।11

कवि के शब्दों में उनके गुरू री शेषराज जी महात्मा उदार दृष्टि सम्पन्न, ज्ञान विज्ञान के आकार सदाचारी एवं सत्यवादी थे–

इत्थं महात्मा स उदारदृक् स्वतः
प्रबुद्ध विज्ञान घनों बुधाग्रणीः।
सदा सदाचारस्तो विशुद्ध वांग्।
जयत्यहों ! मदगुरूरेष लौकिंक।।12

शिक्षाः

कवि की प्रारम्भिक शिक्षा उनके घर पर ही प्रारम्भ हुई। उनके पिता श्री केदारनाथ घिमिरे भी एक उच्चकोटि के विद्वान थे जिनके द्वारा ही कवि की प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान की गई। तत्पश्चात् नेपाल मण्डल के बाल्मीकि महाविद्यालय में इन्होनें शिक्षा प्राप्त किया।
उच्च शिक्षा के लिए बनारस आकर इन्होनें काशाी हिन्दू विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा ग्रहण किया।

कृतियॉ :

विभिन्न स्रोतों के अनुसार जो जानकारी प्राप्त हुई है उसके अनुसार श्री कृष्ण प्रसाद घिमिरे की 14 कृतियां है। जिनमें चार महाकाव्य तीन नाटक और सात अन्य कृतियों है उनका परिचय यहां दिया जा रहा है–

महाकाव्य :

1. श्री कृष्ण चरितामृतम् 2. नाचिकेतसम्
3. ययाति चरितम्
4. वृत्रवधम्

नाटक :

1. पूर्णाहृति नाटक
2. महामोह नाटक
3. नेपालेश्वर गौरवम् अन्य कृतियां :

8. श्री कृष्ण गद्य संग्रह 9. श्री कृष्ण पद्य संग्रह 10. सत्स्तुति कुसुमांजलि

11. संपाति सन्देशम्
12. मनोयानम्
13. श्री राम विलापः 14. गौरी गिरीशम्

निष्कर्ष –

अन्त में यह निष्कर्ष निकलता है कि कवि ने अपने इस कृति में अपने जीवन का इतिवृत्त बड़े ही सजीवता और सहजता से स्पष्ट किया है। उन्होने अपने तथा अपने वंश का परिचय और अपने लौकिंक एवं पारलौकिंक गुरू भगवान् शिव की भी स्तुति किया है। तथा अपनी अनेक कृतियों के बारे में भी वर्णन किया है।